लघु शोध सारांश संकलन

सत्र 2009–10

प्रकाशन

क्रियात्मक अनुसंधान, शोध एवं नवाचार प्रभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छत्तीसगढ़

एम.एड.प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रस्तुत

लघु शोध सारांश संकलन

सत्र 2009–10

संरक्षक

श्री सुधीर अग्रवाल(भा.व.से.)

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

रायपुर, छत्तीसगढ़

मार्गदर्शक

श्री ए.लकड़ा,

संयुक्त संचालक

प्रभारी

श्री एम.निमजे एवं श्रीमती ज्योति चक्रवर्ती

क्रियात्मक अनुसंधान, शोध एवं नवाचार प्रभाग

प्रकाशन

क्रियात्मक अनुसंधान, शोध एवं नवाचार प्रभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

रायपुर, छत्तीसगढ़

प्राक्कथन

शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें गुणवत्ता बनाए रखने के लिए इससे जुड़े सभी घटकों पर निरंतर कार्य करने की आवश्यकता है। इस हेतु क्या कार्य किया जाए, कैसे किया जाए इन बातों का लगातार पता लगाया जाता है। वैज्ञानिक तरीके से यह जानकारी शोध के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर, छत्तीसगढ़ अपनी सहयोगी संस्थाओं की सहायता से शोध कार्य करता है। इन संस्थाओं द्वारा बच्चों के नामांकन, ठहराव, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों पर लगातार कार्य किया जा रहा है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि इन कार्यों का मूल्यांकन भी किया जाए तथा उन क्षेत्रों को खोजा जाए जहाँ और कार्य करने की आवश्यकता है।

शोध अपने प्रायोगिक रूप में खोज, अन्वेषण, विश्लेषण जैसे प्रत्ययों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित अनेकों समस्याओं के कारण और निवारण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। साथ ही किसी कार्य को मूल्यांकित कर नवीन कार्य हेतु रणनीति तैयार करने में मददगार होते हैं।

समय–समय पर बाह्य संस्थाओं द्वारा प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था पर दी गयी रिपोर्ट भी हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि हमारे द्वारा किया गया प्रयास सही दिशा में है अथवा नहीं। इसी कड़ी में जे.आर.एम.रिपोर्ट हमें बच्चों के नामांकन, ठहराव, बालिकाओं की शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा, सामुदायिक सहभागिता प्रशिक्षण में गुणवत्ता के क्षेत्रों, कक्षा–प्रबंधन, नेतृत्व क्षमता, मध्यान्ह भोजन आदि क्षेत्रों में शोध करने के लिए प्रेरित करती है।

हमारे राज्य में संचालित शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् एम.एड.प्रशिक्षार्थियों द्वारा भी लघुशोध किए जाते हैं। एम.एड.प्रशिक्षार्थियों द्वारा किए जाने वाले लघुशोध उन्हें अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं साथ ही लघु शोधों से प्राप्त निष्कर्ष राज्य की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु उपयोगी सिद्ध हुए हैं। एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रतिवर्ष चयनित लघुशोधों का प्रकाशन किया जाता है। इस वर्ष हमें सात शिक्षा महाविद्यालयों–शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर, कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाईनगर, पं.हरिशंकर शुक्ला स्मृति महाविद्यालय शंकरनगर, रायपुर, श्री शंकराचार्य महाविद्यालय सेक्टर–6 भिलाई, भिलाई

मैत्री कॉलेज रिसाली, भिलाई तथा डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर से कुल 176 लघुशोध प्राप्त हुए थे। इनमें से चयनित 55 लघुशोधों का प्रकाशन किया जा रहा है। एम.एड.लघु शोध संकलन प्रकाशन का यह पांचवां वर्ष है। प्रतिवर्ष हम इसमें सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं।

आशा है, यह शोध संकलन आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। शोध संकलन में सुधार हेतु आपके सुझावों का परिषद् में स्वागत है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
परिषद्, रायपुर

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शोध शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
01.	''गणितीय अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता पर शैक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन''—श्रीमती चमेली वर्मा	**01**
02.	''हाईस्कूल स्तर पर एडुसेट के अंतर्गत प्रसारित किये जा रहे शिक्षण, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन एवं प्रभाव का अध्ययन''— श्री लारेन्स कुमार महिलाने	**03**
03.	''+2 स्तर पर विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन, पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में''—जोसफ चाको,	**05**
04.	''कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं के किशोरों की सांवेगिक परिपक्वता के संदर्भ में उनकी समायोजन क्षमता का अध्ययन''—श्रीमती पद्मा सोनी	**07**
05.	''कक्षा आठवीं हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन''—श्रीमती पद्मा ओझा	**09**
06.	''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विभिन्न विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन का तुलनात्मक अध्ययन''—श्रीमती पुष्पा तिवारी,	**11**
07.	''विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन''—श्रीमती पुष्पा नायक	**12**
08.	''शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक—प्रशिक्षकों पर मानवीय मूल्यों की शिक्षा 'मध्यस्थ—दर्शन' के प्रभाव का अध्ययन''—डॉ.श्रीमती सीमा श्रीवास्तव	**13**
09.	''उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''— श्री संजय शुक्ला	**15**
10.	''बी.एड. एवं डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''—श्रीमती सुहासिनी पटलवार	**16**
11.	''उच्च प्राथमिक शाला के शिक्षकों में गणित विषय की अवधारणात्मक समझ का विश्लेषणात्मक अध्ययन''—श्री शंकर सिंह राठौर	**17**

क्रमांक	शोध शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
12.	''गोंड़ एवं बैगा जनजाति के बच्चों की स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''—श्रीमती ऊषा ठावरे	**18**
13.	'विद्यार्थियों की समस्या योग्यता का अध्ययन आदत के संबंध में अध्ययन''— श्रीमती अनु काण्डे	**20**
14.	''छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''—श्री धर्मपाल सिंह	**21**
15.	''बहुकक्षा—बहुस्तरीय (एम.जी.एम.एल.) शिक्षण पद्धति की प्रभाव —शीलता का अध्ययन''—श्री गोपेश कुमार साहू	**22**
16.	''सर्व शिक्षा अभियान के तहत् शिक्षकों के 'सेवाकालीन दक्षता आधारित गणित प्रशिक्षण' की प्रभावशीलता का अध्ययन'' —श्री हरेन्द्र कुमार सिंह	**23**
17.	''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कुंठा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''—डॉ.श्रीमती ज्योति शुक्ला	**24**
18.	''बालिका शिक्षा की प्रभावशीलता का अध्ययन शैक्षिक योजनाओं के संदर्भ में''—श्री मोहनलाल पटेल	**25**
19.	''बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''—श्रीमती मीरा साव,	**26**
20.	''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यावसायिक अभिरुचि के संदर्भ में अध्ययन''—श्रीमती निशा डोनगांवकर	**27**
21.	''गणितीय अभियोग्यता का छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिकता के संदर्भ में अध्ययन''—श्री नरेन्द्र प्रसाद मिश्रा	**28**
22.	''विद्यालयीन परिवेश का ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''—श्री नवीन जायसवाल	**29**

क्रमांक	शोध शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
23.	''नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन''—श्रीमती रजनी गुप्ता	**31**
24.	''मल्टीमीडिया उपागम के प्रयोग का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' —श्रुति दिघ्रस्कर	**32**
25.	''कम्प्यूटर एडेड इन्सट्रक्शन आधारित गणित शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''—श्री विजय कुमार सोम	**33**
26.	''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों में योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''—सुश्री शिखा शर्मा	**34**
27.	''उच्च शिक्षित एवं निम्न शिक्षित पालकों के बच्चों में अंधविश्वासी प्रवृत्ति पर अध्ययन''—श्रीमती सुमित्रा दुबे	**35**
28.	''विद्यालयों में आपदा प्रबंधन संबंधित सेवाओं पर एक अध्ययन'' —श्रीमती स्वप्ना व्यवहारे	**36**
29.	''घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''—श्री ब्रीजेश प्रताप सिंह	**37**
30.	''बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन लिंग एवं अध्ययन विषयों के संदर्भ में''—श्री संजय गायकवाड़	**38**
31.	''नियमित व अनियमित शिक्षकों के शिक्षकीय तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना''—सुश्री सुषमा चौधरी	**39**
32.	''उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की रुचि का तुलनात्मक अध्ययन''—सुश्री पूनम सिंह	**40**
33.	''छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा दसवीं की गणित विषय की पुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन''—श्री अनिल कुमार अग्रहरि,	**41**
34.	''बिलासपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च प्राथमिक स्तर की शासकीय शालाओं में बालिका शिक्षा की प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन''—मधुरिका यूसेबियस	**43**

क्रमांक	शोध शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
35.	''बिलासपुर शहर के शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 8वीं के न्यून उपलब्धि स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन''—श्री धनलाल जायसवाल	**44**
36.	''बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन रायपुर नगर के संदर्भ में''—श्रीमती दीप्ति सोलंकी	**46**
37.	''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालय परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन''—श्रीमती जगरानी खाखा	**47**
38.	''शारीरिक रूप से विकलांग व गैर विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन''—सुश्री मनोरंजन प्रसाद	**48**
39.	''रायपुर शहर के आसपास की श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों की बालकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति'' —श्रीमती रितु वर्मा	**49**
40.	"A study of achievement level and interest in learning of children studying by Traditional methodology and Multi Grade Multi Level."-**Smt.Archana Verulkar**	**51**
41.	"Developing oral communication skills through language games in English at Primary level."-**Smt.Indrani Nandy**	**52**
42.	"A study of Multiple Intelligence among the students of Higher Primary Level."**Miss.Sandhya Sahu**	**53**
43.	"To study the effect of innovative methods on joyful learning"- **Miss.Prity Toppo**	**54**
44.	"A study on low achievers in relation to their educational Maladjustment of Grade VIII Students."-**Shraddha Bardiya**	**55**
45.	"Stress level in school teachers."-**Miss.Bhawna Gardia**	**56**
46.	"Impact of Anxiety on study habits of class-IX Students." - **Rajeev Deepti**	**57**

क्रमांक	शोध शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
47.	"A study of attitudes of parents towards mentally retarded children."-**Miss.Anita Sharma**	**58**
48.	"Attitudes of principals, teachers, students and parents towards grading system in CBSE Schools."-**Smt.Nandita Chatterjee**	**59**
49.	"A study on effective implementation of Mid-Day Meal Programme in Lower and Upper Primary School in Bilaspur City."-**Shri.Kamalesh Adhikari**	**60**
50.	"A comparative study of the curriculum of Commerce subject at Higher Secondary level, developed by Chhattisgarh Board of Secondary Education and Central Board of Secondary Education." **-Shri.Awinash Pandey**	**61**
51.	"A Comparative study of Adjustment Problems of SC, ST and General Students of High School of Raipur City." **- Miss Bani Das**	**63**
52.	"A comparative study of school climate and academic achievement of students of high and low effective primary schools."-**Miss.Binita Kumari**	**64**
53.	"A study of Emotional Intelligence of Higher Secondary students in relation to academic anxiety and the streams." **-Jashmesh Sidhu**	**65**
54.	"A study on the causes of the slow learing at primary level and guidelines for the teachers."-**Miss.Kanan Kirtania**	**67**
55.	"A comparative study of the reasoning ability of English and Hindi Medium Primary School Students."- **Smt.Preety Kori**	**68**

शोध क्रमांक–1

वर्मा, चमेली (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''गणितीय अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता पर शैक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन पश्चात् नियंत्रित समूह की गणितीय अभिक्षमता तथा सृजनात्मकता ज्ञात करना।
2. शैक्षिक तकनीकी के उपयोग द्वारा अध्यापन पश्चात् प्रायोगिक समूह की गणितीय अभिक्षमता तथा सृजनात्मकता ज्ञात करना।
3. शिक्षण के पश्चात् नियंत्रित और प्रायोगिक समूह की गणितीय अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता की तुलना करना।

न्यादर्श–शासकीय पूर्व माध्यमिक अभ्यास शाला, शंकर नगर रायपुर की कक्षा 8वीं के 80 छात्रों (40 नियंत्रित समूह, 40 प्रायोगिक समूह) का चयन पूर्व अभिक्षमता परीक्षण के आधार पर किया गया।

शोध विधि– प्रयोगात्मक विधि

शोध उपकरण–

1. गणितीय अभिक्षमता परीक्षण–स्वनिर्मित
2. सृजनात्मकता परीक्षण–स्वनिर्मित
3. शिक्षण अधिगम सामग्री

निष्कर्ष–

1. परम्परागत विधि से अध्यापन पूर्व व अध्यापन पश्चात् नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की गणितीय अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. परम्परागत विधि से अध्यापन पूर्व व अध्यापन पश्चात् नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. शैक्षिक तकनीकी के उपयोग से अध्यापन पूर्व व अध्यापन पश्चात् प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की गणितीय अभिक्षमता में सार्थक अंतर पाया गया।

4. शैक्षिक तकनीकी के उपयोग से अध्यापन पूर्व व अध्यापन पश्चात् प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया।

5. नियंत्रित समूह और प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में अध्यापन पश्चात् गणितीय अभिक्षमता तथा सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः ''उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण के लिए शैक्षिक तकनीकी के उपयोग सहित शिक्षण विधि, परम्परागत शिक्षण विधि से अधिक प्रभावशील होती है।''

——00——

शोध क्रमांक–2

महिलाने, लारेन्स कुमार (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''हाईस्कूल स्तर पर एडुसेट के अंतर्गत प्रसारित किये जा रहे शिक्षण, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन एवं प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. एडुसेट द्वारा प्रसारित कक्षा शिक्षण कार्यक्रमों का विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. एडुसेट से प्रसारित कार्यक्रमों को देखने वाले विद्यार्थियों में पीईटी परीक्षाओं के प्रति आयी जागरूकता का पता लगाना।
3. एडुसेट द्वारा प्रसारित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का पता लगाना।
4. एडुसेट से पालकों हेतु प्रसारित कार्यक्रमों द्वारा पालकों में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति आयी जागरूकता का पता लगाना।

न्यादर्श–रायपुर तथा दुर्ग जिले की दो–दो शालाओं की कक्षा 12वीं के छात्रों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. उपलब्धि परीक्षण–स्वनिर्मित
2. अभिरूचि परीक्षण–स्वनिर्मित
3. पीईटी/पीएमटी परीक्षाओं हेतु जागरूकता परीक्षण–स्वनिर्मित
4. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम परीक्षण पत्र–स्वनिर्मित
5. पालकों में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता संबंधी परीक्षण पत्र–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. नियमित कक्षा शिक्षण के साथ–साथ एडुसेट से भी पढ़ने वाले विद्यार्थियों में संबंधित बिंदुओं की धारणा केवल नियमित कक्षा–शिक्षण पाने वाले विद्यार्थियों

की तुलना में ज्यादा अच्छी तरह होती है तद्नुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ती है।

2. एडुसेट से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि अधिक पायी गयी।
3. एडुसेट के माध्यम से दिये जा रहे शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल होने वाले शिक्षकों एवं बिना एडुसेट शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों के व्यवसायिक कौशल तथा कार्यव्यवहार में कोई अंतर नहीं पाया गया।
4. एडुसेट द्वारा परामर्श–निर्देशन कार्यक्रम के अच्छे, कुशल और उपयोगी संचालन ने विद्यार्थियों को पीईटी/पीएमटी के प्रति अधिक जागरूक किया।
5. एडुसेट से प्रसारित कार्यक्रमों को देखने वाले पालकों में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता, उन पालकों की अपेक्षा अधिक पायी गयी जिन्होंने एडुसेट पर पालकों हेतु विशेष रूप से प्रसारित मार्गदर्शन कार्यक्रम और सामुदायिक सहभागिता के कार्यक्रम नहीं देखे थे।

––00––

शोध क्रमांक–3

चाको, जोसफ (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''+2 स्तर पर विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन, पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में''

उद्देश्य–

1. +2 स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता कार्यक्रमों तथा उसके प्रभावों का अध्ययन करना।
2. +2 स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता तथा पर्यावरण संबंधी समस्याओं को हल करने की योग्यता का अध्ययन करना।

न्यादर्श– दुर्ग जिले के 04 ग्रामीण तथा 04 शहरी विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय से 25–25 छात्र–छात्राओं अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. पर्यावरण जागरूकता योग्यता मापनी–डॉ.प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित
2. समस्या समाधान योग्यता मापनी–शोधकर्ता द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरुकता में अंतर पाया गया।

2. (अ) शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में अंतर पाया गया। छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक पायी गयी क्योंकि छात्र पर्यावरण संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते रहते हैं। संचार के विभिन्न माध्यमों जिनमें

पर्यावरण संचेतना एवं पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं से जुड़े रहते हैं जबकि छात्राएँ अन्य कार्यक्रमों में अधिक रूचि लेती हैं।

(ब) ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में अंतर पाया गया। छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक पायी गयी क्योंकि वे पर्यावरण संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों में अधिक भाग लेते हैं। ग्रामीण छात्राओं को विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति पालक सहज रूप से प्रदान नहीं करते। अतः छात्राओं में पर्यावरणीय जागरुकता एवं समस्या समाधान योग्यता कम पायी गयी।

4. शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरुकता एवं समस्या समाधान योग्यता में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।

5. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरुकता एवं समस्या समाधान योग्यता में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–4

सोनी, पद्मा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''कामकाजी एवं घरेलू महिलाओं के किशोरों की सांवेगिक परिपक्वता के संदर्भ में उनकी समायोजन क्षमता का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. घरेलू तथा कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक व बालिकाओं की सांवेगिक परिपक्वता का पता लगाना।
2. घरेलू तथा कामकाजी महिलाओं के किशोर बालक व बालिकाओं की समायोजन क्षमता का पता लगाना।

न्यादर्श–

4 शासकीय विद्यालयों के 200 किशोर जिनमें घरेलू व कामकाजी महिलाओं के 50–50 बालक व 50–50 बालिकाएं थीं, का सौदेश्यपूर्ण चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– 1. समायोजन क्षमता मापनी
2. सांवेगिक परिपक्वता मापनी

निष्कर्ष–

1. घरेलू महिलाओं के किशोर बालकों की समायोजन क्षमता, कामकाजी महिलाओं के किशोर बालकों की समायोजन क्षमता से अधिक पायी गयी।
2. घरेलू महिलाओं की किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता, कामकाजी महिलाओं की किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता से अधिक पायी गयी।

3. कामकाजी महिलाओं के किशोर बालकों की सांवेगिक परिपक्वता, घरेलू महिलाओं के किशोर बालकों की सांवेगिक परिपक्वता से अधिक पायी गयी।
4. घरेलू महिलाओं की किशोर बालिकाओं की सांवेगिक परिपक्वता और कामकाजी महिलाओं की किशोर बालिकाओं की सांवेगिक परिपक्वता में अंतर नहीं पाया गया।
5. घरेलू महिलाओं के किशोर बालकों की समायोजन क्षमता और सांवेगिक परिपक्वता में सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
6. घरेलू महिलाओं की किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता और सांवेगिक परिपक्वता में नगण्य सह संबंध पाया गया।
7. कामकाजी महिलाओं के किशोर बालकों की समायोजन क्षमता और सांवेगिक परिपक्वता में निम्न धनात्मक सह संबंध पाया गया।
8. कामकाजी महिलाओं की किशोर बालिकाओं की समायोजन क्षमता तथा सांवेगिक परिपक्वता में सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–5

ओझा, पद्मा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''कक्षा आठवीं हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. कक्षा आठवीं हिन्दी पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करना।
2. हिन्दी पाठ्यपुस्तक का उपयोग करने पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।

न्यादर्श– 6 (3 शहरी, 3 ग्रामीण) शालाओं के 200 विद्यार्थियों तथा 10 ग्रामीण एवं 10 शहरी शिक्षकों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. हिन्दी उपलब्धि परीक्षण (प्रमापीकृत)–स्वनिर्मित
2. शिक्षक एवं छात्र अभिमतावली–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. हिन्दी पाठ्यपुस्तक अध्ययन व अध्यापन के लिए उपयोगी है। 60 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक में जो कविताएँ, निबंध, कहानी, आत्मकथा, चरित्र चित्रण, पत्र, विवरण, लघुकथाएं, जीवन चरित्र स्तरीय हैं एवं कक्षा आठ की दृष्टि से उपयुक्त एवं उपयोगी हैं।

2. पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त चित्र अस्पष्ट हैं अतः चित्रों का मुद्रण स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

3. कागज की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता है। साथ ही इसकी बाईंडिंग बहुत जल्दी खुल जाती है। ऐसा शिक्षकों एवं छात्रों दोनों का अभिमत है। भार व मोटाई के अनुसार कागज की गुणवत्ता बढ़ायी जाये।

4. पुस्तक में सरल भाषा का प्रयोग किया गया है, ग्रामीण स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी है अतः छात्रों को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

5. मुख पृष्ठ, अर्थपूर्ण, भावपूर्ण, उद्देश्यपरक एवं आकर्षक होना चाहिए जो बाल मनोभावों को व्यक्त करता हो तब वह कक्षा आठ के लिए उपयुक्त है। किंतु प्रस्तुत भारती में एक पुष्प प्रदर्शित किया गया है। शिक्षकों का मानना है कि यह विद्यार्थियों को कोई स्पष्ट संदेश नहीं देता। अतः 40 प्रतिशत शिक्षक कव्हर पेज को साधारण मानते हैं।

——00——

शोध क्रमांक–6

तिवारी, पुष्पा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''उच्च्तर माध्यमिक स्तर के विभिन्न विद्यालयों में पुस्तकालय प्रबंधन का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थिति का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में पुस्तकालय के भौतिक स्वरूप, पुस्तकों के उपयोग तथा पुस्तकालय प्रबंधन का अध्ययन करना।

न्यादर्श–

रायपुर जिले के 05 शहरी, 05 ग्रामीण विद्यालयों के 5–5 प्राचार्य, 5–5 ग्रंथपाल एवं 50–50 छात्रों का सोद्देश्यपूर्ण चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– 1. प्रश्नावली–स्वनिर्मित

2. शैक्षिक उपलब्धि मापनी–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों की अपेक्षा शहरी विद्यालयों के ग्रंथपाल पुस्तकालय के प्रति प्रबंधन में अधिक सजग पाए गए।
2. शहरी विद्यालयों में पुस्तकालय के भौतिक स्वरूप के प्रति प्राचार्य अधिक सजग पाए गए अतः दोनों क्षेत्रों के पुस्तकालय के भौतिक स्वरूप में अंतर पाया गया।
3. शहरी विद्यालयों के विद्यार्थी, ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा पुस्तकालय का अधिक उपयोग करते पाए गए।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों की अपेक्षा शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सभी विषयों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च (अधिक) पाया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि व पुस्तकालय की स्थिति के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–7

नायक, पुष्पा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के शालेय वातावरण की तुलना करना।

न्यादर्श–

शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के 100–100 विद्यार्थी, कुल 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– प्रायोगिक विधि

शोध उपकरण–
1. व्यक्तिगत मूल्य परीक्षण
2. शालेय वातावरण मापनी

निष्कर्ष–

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मूल्य शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाए गए।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी क्षेत्र का शालेय वातावरण, ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा अधिक उत्तम पाया गया।
4. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों एवं शालेय वातावरण में धनात्मक सह–संबंध पाया गया क्योंकि शहरी क्षेत्र में विद्यालयीन दशाओं का विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है।

––00––

शोध क्रमांक–8

श्रीवास्तव, सीमा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक–प्रशिक्षकों पर मानवीय मूल्यों की शिक्षा 'मध्यस्थ–दर्शन' के प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. मानवीय मूल्यों के संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन आधारित जीवन विद्या सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले तथा नहीं होने वाले छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. जीवन विद्या सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले तथा नहीं होने वाले छात्रा–ध्यापकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों की जीवन संबधी आवश्यकताओं (प्राथमिकताओं) का पता लगाना।
3. जीवन विद्या सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले तथा नहीं होने वाले छात्रा–ध्यापकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य शैली का पता लगाना।

न्यादर्श–

यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर तथा बिलासपुर के छात्राध्यापक एवं शिक्षक प्रशिक्षक तथा 6 माह का अध्ययन शिविर करने वाले 6 शिक्षकों का चयन।

शोध विधि– प्रायोगिक विधि

शोध उपकरण– 1. साक्षात्कार
2. प्रश्नावली–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. जिन छात्राध्यापकों ने एवं शिक्षक प्रशिक्षकों ने मध्यस्थ दर्शन आधारित जीवन विद्या सूचना शिविर में सम्मिलित होकर अध्ययन किया उनके दृष्टिकोण में मानवीय मूल्यों का औचित्य पाया गया।

2. जीवन विद्या सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले छात्राध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की जीवन संबंधी आवश्यकताएँ (प्राथमिकताएँ) सीमित और महत्वपूर्ण थीं।

3. जीवन विद्या सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले छात्राध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य शैली अधिक दायित्वपूर्ण और व्यवस्थित पाई गई उन छात्राध्यापकों और शिक्षक प्रशिक्षकों की तुलना में जो शिविर में सम्मिलित नहीं हुए।

4. शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों पर मानवीय मूल्यों की शिक्षा 'मध्यस्थ दर्शन' का सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हुआ।

——00——

शोध क्रमांक–9

शुक्ला, संजय (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण छात्र/छात्राओं के पारिवारिक वातावरण एवं अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श–

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के 05–05 शासकीय विद्यालयों के 60 छात्र एवं 60 छात्राओं, कुल 120 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. पारिवारिक वातावरण मापनी–डॉ.करूणा शंकर मिश्रा
2. अध्ययन आदत मापनी–डॉ.एम.मुखोपाध्याय, डॉ.डी.एन.सनसनवाल

निष्कर्ष–

1. उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अंतर है अर्थात् दोनों समूहों के पारिवारिक वातावरण में समानता नहीं है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदत शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के समान पायी गयी है, जबकि उनके पारिवारिक वातावरण में भिन्नता है। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्र में भी अच्छे अध्यापन की व्यवस्था का उपलब्ध होना है। शहरी क्षेत्र के समान ही ग्रामीण क्षेत्र में भी अध्यापकों की पर्याप्त संख्या में नियुक्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण, छात्रवृत्ति के रूप में प्रोत्साहन राशि, मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था आदि ऐसे कारण हैं जो ग्रामीण छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदत को बढ़ाने में सहायक हैं।

––00––

शोध क्रमांक–10

पटलवार, सुहासिनी (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''बी.एड. एवं डी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. सीधी भर्ती से चयनित और विभागीय बी.एड.प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. डी.एड. महिला एवं पुरुष प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

न्यादर्श–

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर तथा डाइट रायपुर के छात्राध्यापकों का यादृच्छिक चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. शिक्षण अभिवृत्ति मापनी–डॉ.एस.पी.अहलूवालिया

निष्कर्ष–

1. बी.एड.सीधी भर्ती तथा विभागीय पुरुष प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् दोनों की शिक्षण अभिवृत्ति एक समान पायी गयी।
2. बी.एड. सीधी भर्ती एवं विभागीय महिला प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् दोनों की शिक्षण अभिवृत्ति एक समान पायी गयी।
3. बी.एड.सीधी भर्ती पुरुष तथा महिला प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस प्रकार दोनों की शिक्षण अभिवृत्ति में समानता पायी गयी।
4. डी.एड.पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः डी.एड.पुरुष एवं महिला प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अभिवृत्ति समान पायी गयी।
5. बी.एड.महिला तथा डी.एड.महिला प्रशिक्षार्थी, बी.एड.पुरुष तथा डी.एड.पुरुष की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया अर्थात् बी.एड.महिला/पुरुष प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अभिवृत्ति डी.एड.महिला/पुरुष प्रशिक्षार्थी की शिक्षण अभिवृत्ति से अधिक पायी गयी।

शोध क्रमांक–11

राठौर, शंकर सिंह (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''उच्च प्राथमिक शाला के शिक्षकों में गणित विषय की अवधारणात्मक समझ का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित अध्यापनरत् शिक्षकों की विभिन्न इकाईयों पर समझ को जानना।
2. उच्च प्राथमिक शाला के गणित शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण आवश्यकताओं का चिन्हांकन करना।
3. उच्च प्राथमिक शाला के गणित शिक्षकों की दृष्टि से बच्चों के लिए कठिन अवधारणाओं की पहचान करना।

न्यादर्श–दुर्ग जिले के दुर्ग विकासखण्ड की उच्च प्राथमिक शालाओं में गणित विषय अध्यापनरत शिक्षक।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–प्रश्नावली–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. उच्च प्राथमिक शाला के शिक्षकों में चिन्हित अवधारणाओं की शत्–प्रतिशत् समझ नहीं पायी गयी। शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ पर आधारित प्राप्तांक का औसत 64.6 प्रतिशत प्राप्त हुआ।
2. शिक्षाकर्मी एवं शिक्षक संवर्ग के शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ में अंतर नहीं पाया गया।
3. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ में अंतर पाया गया। प्रशिक्षित शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ में, अप्रशिक्षित शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ की तुलना में अधिक स्पष्टता पायी गयी।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित अध्यापनरत् शिक्षकों की अवधारणात्मक समझ एवं उनके शैक्षणिक अध्यापन अनुभव में निम्न कोटि का धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–12

ठावरे, ऊषा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर ''गोंड़ एवं बैगा जनजाति के बच्चों की स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. गोंड़ एवं बैगा जनजाति के छात्र–छात्राओं की स्वचेतना तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. कबीरधाम जिले के बोड़ला एवं पण्डरिया विकासखण्ड में व्याप्त शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।

न्यादर्श– कबीरधाम जिले के पंडरिया एवं बोड़ला विकासखण्ड 5–5 उच्च प्राथमिक शालाओं के 50–50 (50 गोंड, 50 बैगा) बच्चों का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– प्रायोगिक विधि

शोध उपकरण–

1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण–स्वनिर्मित
2. स्वचेतना मापनी–डॉ.आशा शुक्ला

निष्कर्ष–

1. बैगा जनजाति के छात्रों की स्वचेतना, गोंड जनजाति के छात्रों की स्वचेतना से अधिक पायी गयी।
2. बैगा जनजाति की छात्राओं की स्वचेतना, गोंड़ जनजाति की छात्राओं की स्वचेतना से अधिक पायी गयी।
3. गोंड़ एवं बैगा जनजाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। गोंड़ जनजाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बैगा जनजाति के छात्रों से अधिक पायी गयी।
4. गोंड़ एवं बैगा जनजाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया। बैगा जनजाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि गोंड़ जाति की छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गयी।
5. गोंड़ जनजाति के विद्यार्थियों की स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य नगण्य सह संबंध पाया गया।

6. बैगा जनजाति के छात्रों की स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
7. गोंड़ जनजाति की छात्राओं की स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सह संबंध पाया गया।
8. बैगा जनजाति की छात्राओं की स्वचेतना एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

——00——

शोध क्रमांक–13

काण्डे, अनु (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''विद्यार्थियों की समस्या योग्यता का अध्ययन आदत के संबंध में अध्ययन''

उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का पता लगाना।
2. ग्रामीण एवं शहरी छात्र/छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता एवं अध्ययन आदतों की तुलना करना।
3. छात्र–छात्राओं को उत्तम अध्ययन आदत एवं समस्या समाधान योग्यता विकसित करने हेतु प्रेरित करना।

न्यादर्श–बिल्हा विकासखण्ड के 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा ग्यारहवीं के 200 विद्यार्थी।

शोध विधि– मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. समस्या समाधान योग्यता मापनी–एल.एन.दुबे निर्मित
2. अध्ययन आदत मापनी–विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को जानने हेतु डॉ.एम.मुखोपाध्याय एवं डॉ.एम.एम.सनसनवाल द्वारा निर्मित।

निष्कर्ष–

1. विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता एवं अध्ययन आदतों के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
2. शहरी विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता, ग्रामीण बच्चों की समस्या समाधान योग्यता से उच्च पायी गयी।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।
4. उच्च एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–14

सिंह, धर्मपाल (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. विभागीय एवं सीधी भर्ती बी.एड.के छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यावसायिक अभिवृत्ति का मापन करना।
2. महिला एवं पुरुष छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यावसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कला संकाय के पुरुष एवं महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।
4. विज्ञान संकाय के पुरुष एवं महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन।

न्यादर्श–

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय बिलासपुर एवं रायपुर के बी.एड. के 160 छात्राध्यापक जिसमें विभागीय तथा सीधी भर्ती कला संकाय के 40–40, विज्ञान संकाय के 40–40, कुल 160 छात्राध्यापक का यादृच्छिक चयन किया गया।

शोध विधि– सर्वेक्षणात्मक विधि

शोध उपकरण–अध्यापक अभिवृत्ति मापनी–डॉ.एस.पी.अहलुवालिया, नेशनल फिजिकल कार्पोरेशन 4/230, कचहरी घाट, आगरा द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. विभागीय एवं सीधी भर्ती बी.एड. के छात्राध्यापकों की शिक्षकीय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. विभागीय एवं सीधी भर्ती बी.एड. के पुरुष छात्राध्यापकों तथा महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. विभागीय एवं सीधी भर्ती बी.एड. के कला संकाय की महिला व पुरुष छात्राध्यापकों की शिक्षकीय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।
4. विभागीय एवं सीधी भर्ती बी.एड. के विज्ञान संकाय की महिला व पुरुष छात्राध्यापकों की शिक्षकीय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–15

साहू, गोपेश कुमार (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''बहुकक्षा–बहुस्तरीय (एम.जी.एम.एल.) शिक्षण पद्धति की प्रभावशीलता का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण प्रणली एवं परम्परागत शिक्षण प्रणाली की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
2. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण एवं परम्परागत शिक्षण समूहों में शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण एवं परम्परागत शिक्षण समूहों में छात्र–छात्राओं की उपस्थिति का सर्वेक्षण करना।
4. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति के संबंध में पालकों का अभिमत ज्ञात करना।

न्यादर्श–शासकीय जनपद प्राथमिक शाला बिरगहनी (च) की कक्षा 1 व 2 के 100 छात्र–छात्राओं का यादृच्छिक चयन तथा समान बौद्धिक स्तर पर अंतिम परीक्षण के लिए 80 छात्र–छात्राओं का चयन।

शोध विधि– प्रयोगात्मक विधि

शोध उपकरण–

1. उपलब्धि परीक्षण–स्वनिर्मित
2. पालक सर्वेक्षण प्रश्नावली–स्वनिर्मित
3. शाला का अभिलेख–आयु समूह जानकारी हेतु
4. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति अध्यापन हेतु निर्मित माइल स्टोन के कार्ड्स

निष्कर्ष–

1. बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण द्वारा अध्यापन के पश्चात् परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों एवं परम्परागत शिक्षण द्वारा अध्यापन के पश्चात् प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है।
2. विद्यार्थियों का बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति द्वारा अध्यापन के पश्चात् मूल्यांकन करने पर शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च पाया गया।
3. पालकों का मत बहुकक्षा बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति के प्रति उच्च सकारात्मक है। सभी पालकों ने इस शिक्षण पद्धति को स्वीकार किया है। 87 प्रतिशत पालकों ने इस शिक्षण पद्धति को बच्चों की शिक्षा के गुणात्मक विकास में सहायक बताया है तथा परम्परागत शिक्षण पद्धति की तुलना में श्रेष्ठ बताया है।

शोध क्रमांक–16

सिंह, हरेन्द्र कुमार (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''सर्व शिक्षा अभियान के तहत् शिक्षकों के 'सेवाकालीन दक्षता आधारित गणित प्रशिक्षण' की प्रभावशीलता का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की गणितीय अभिवृत्ति में परिवर्तन को ज्ञात करना।
2. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक–शिक्षिकाओं के द्वारा अध्यापित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. सर्व शिक्षा अभियान के दक्षता आधारित प्रशिक्षण के परिप्रेक्ष्य में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षकीय अभिवृत्ति का बालक तथा बालिकाओं (लिंग भेद के आधार पर) शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. सर्व शिक्षा अभियान के दक्षता आधारित गणित प्रशिक्षण के परिप्रेक्ष्य में लिंग, क्षेत्र, शालेय परिवेश, उपलब्ध संसाधनों के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. प्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षकीय अभिवृत्ति का उनके द्वारा अध्यापित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श–

सरगुजा जिले के प्रतापपुर विकासखण्ड के 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण उच्च प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. गणित अभिवृत्ति मापनी–डॉ.एस.सी.गाखर (चण्डीगढ़) तथा रजनी (चण्डीगढ़) द्वारा वर्ष 2004 में निर्मित।
2. गणित उपलब्धि परीक्षण (Mathematics Achievement test) डॉ.एल.एन.दुबे (जबलपुर) (National psychological Corporation Agra) द्वारा निर्मित

निष्कर्ष– शिक्षकों की गणितीय अभिवृत्ति एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग (महिला–पुरुष) तथा क्षेत्र (ग्रामीण–शहरी) का कोई प्रभाव नहीं पाया गया किंतु प्रशिक्षण (सेवाकालीन–दक्षता आधारित गणित प्रशिक्षण) का सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

शोध क्रमांक–17

शुक्ला, ज्योति (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कुंठा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. परिक्षेत्र के आधार पर विभिन्न संकाय के छात्र–छात्राओं में कुंठा का स्तर ज्ञात करना।
2. परिक्षेत्र के आधार पर विभिन्न संकाय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ज्ञात करना।
3. परिक्षेत्र व लिंग के आधार पर विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों में कुंठा के स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध ज्ञात करना।

न्यादर्श–

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के 160 विद्यार्थियों (80 छात्र, 80 छात्राएँ) का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. **कुंठा मापनी**–डॉ.के.शर्मा, प्रोफेसर, वुमेन एण्ड चाइल्ड डेव्हलमेंट, डॉ.बाबा साहेब अम्बेडकर, नेशनल इंस्टीट्यूट और सोशल साइंस महु, म.प्र. द्वारा निर्मित
2. **शैक्षिक उपलब्धि**–कक्षा 11वीं छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर के विद्यार्थियों के वर्ष 2008–2009 परीक्षा के प्राप्तांक

निष्कर्ष–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के कुंठा स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के कला संकाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. परिक्षेत्र एवं लिंग के आधार पर विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों में कुंठा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य निम्न स्तर का ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।

शोध क्रमांक–18

पटेल, मोहनलाल (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''बालिका शिक्षा की प्रभावशीलता का अध्ययन शैक्षिक योजनाओं के संदर्भ में''

उद्देश्य–

1. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं की दर्ज संख्या का अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की दर्ज संख्या, उपस्थिति, प्रतिधारण दर तथा शैक्षिक उपलब्धि पर शासन की विभिन्न योजनाओं का प्रभाव ज्ञात करना।

न्यादर्श–

बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड स्थित शहरी एवं ग्रामीण उ.मा.शालाओं की 200 छात्राओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. शैक्षिक उपलब्धि मापनी–स्वनिर्मित
2. प्राचार्यों/शिक्षकों हेतु प्रश्नावली–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. शासन द्वारा प्रदत्त विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के अंतर्गत दी जाने वाली सुविधाएँ छात्रवृत्ति, निःशुल्क सरस्वती सायकल योजना, निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक आदि की सुविधाएं मिलने के कारण उच्च माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं की संख्या में उत्तरोतर वृद्धि हुई है एवं नियमित अध्ययन के प्रति रुचि जागृत हुई है।
2. निःशुल्क सरस्वती सायकल प्रदाय योजना एवं निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना शत्–प्रतिशत् लागू है और इसकी सफलता भी शत्–प्रतिशत् हुई है।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं में शिक्षा सत्र के मध्य में शाला त्यागने की संख्या में कमी आई है परिणामों से स्पष्ट है कि कमी का कारण शासन द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सुविधाएं हैं जिसमें निःशुल्क सरस्वती सायकल प्रदाय योजना एवं निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना मुख्य है।
4. शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि के लिए शैक्षिक विकास योजनाएं महत्वपूर्ण साबित हुई हैं। इससे बालिकाओं की प्रतिधारण दर में वृद्धि तथा अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ी है।

––00––

शोध क्रमांक–19

साव, मीरा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की पहचान करना।
2. बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रूचि ज्ञात करना एवं उनके मध्य तुलना करना।
3. बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना एवं दोनों के मध्य अंतर ज्ञात करना।

न्यादर्श– बिलासपुर नगर के 5 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा–दसवीं के 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. व्यक्तित्व मापनीः डॉ.पी.एफ.अजीज एवं कु.रेखा अग्निहोत्री द्वारा निर्मित
2. शैक्षिक रुचि प्रपत्रः श्री एस.पी.कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि विभिन्न विषय क्षेत्रों में लगभग समान पायी गयी।
2. बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। बहिर्मुखी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अन्तर्मुखी विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी।

––00––

शोध क्रमांक–20

डोनगांवकर, निशा (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यावसायिक अभिरुचि के संदर्भ में अध्ययन''

उद्देश्य–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग/क्षेत्रीयता के आधार पर सृजनात्मकता के स्तर का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग/क्षेत्रीयता के आधार पर व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं व्यावसायिक अभिरूचि में संबंध का अध्ययन करना।

न्यादर्श–

बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड के माध्यमिक स्तर की कक्षा 9वीं में अध्ययनरत् 100 बालक/बालिकाओं का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. सृजनात्मकता स्तर मापनी–डॉ.वी.के.पासी निर्मित।
2. व्यावसायिक अभिरूचि मापनी–डॉ.एस.पी.कुलश्रेष्ठ निर्मित।

निष्कर्ष–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर सृजनात्मकता स्तर में अंतर पाया गया। छात्रों में सृजनात्मकता का स्तर अधिक पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में क्षेत्रीयता के आधार पर सृजनात्मकता स्तर में कोई अंतर नहीं पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर व्यावसायिक अभिरूचि में कोई अंतर नहीं पाया गया।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में क्षेत्रीयता के आधार पर व्यावसायिक अभिरूचि में कोई अंतर नहीं पाया गया।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं व्यावसायिक अभिरूचि में कोई सहसंबंध नहीं पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–21

मिश्रा, नरेन्द्र प्रसाद (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''गणितीय अभियोग्यता का छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिकता के संदर्भ में अध्ययन''

उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों की गणितीय अभियोग्यता तथा व्यावसायिक प्राथमिकता ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की गणितीय अभियोग्यता व व्यावसायिक प्राथमिकता में संबधं ज्ञात करना।
3. विभिन्न व्यावसायिक प्राथमिकता के छात्रों की गणितीय अभियोग्यता ज्ञात करना।

न्यादर्श– शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की शालाओं की कक्षा 10 के विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सामान्य सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. व्यावसायिक अभिरुचि प्रपत्र
2. गणितीय अभियोग्यता परीक्षण–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. छात्र एवं छात्राओं की गणितीय अभियोग्यता में अंतर पाया गया।
2. छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक प्राथमिकता के अंतर्गत साहित्यिक एवं कृषि कार्य में अंतर पाया गया।
3. शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की गणितीय अभियोग्यता में अंतर पाया गया।
4. शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिकता के अंतर्गत कृषि कार्य एवं हाउस होल्ड कार्य में अंतर पाया गया।
5. छात्रों ने सर्वाधिक व्यावसायिक प्राथमिकता सामाजिक कार्यों को दी।
6. छात्रों ने सबसे कम व्यावसायिक प्राथमिकता संरचनात्मक कार्यों को दी।
7. उच्च गणितीय अभियोग्यता के छात्रों ने सर्वाधिक व्यावसायिक प्राथमिकता में प्रशासकीय क्षेत्र का चयन किया एवं सबसे कम व्यावसायिक प्राथमिकता संरचनात्मक कार्य क्षेत्र को दी।

––00––

शोध क्रमांक–22

जायसवाल, नवीन (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''विद्यालयीन परिवेश का ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में शहरी/ग्रामीण परिवेश तथा लिंग के आधार पर अंतर ज्ञात करना।
2. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में केन्द्र व राज्य सरकार के विद्यालयों में पाठ्यक्रम के आधार पर अंतर ज्ञात करना।
3. विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों में ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता का अंतर ज्ञात करना।
4. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों के दृष्टिकोण में अंतर ज्ञात करना।
5. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता पर विद्यालयीन परिवेश का प्रभाव ज्ञात करना।

न्यादर्श–

सरगुजा जिला के 2 केन्द्रीय व 2 राज्य बोर्ड के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11वीं (विज्ञान व कला संकाय) में अध्ययनरत् 160 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. **विद्यालय परिवेश मापनी**–डॉ.करूणा शंकर मिश्र, रीडर, शिक्षा विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय इलाहाबाद (अंकुर साइकोलॉजिकल एजेंसी 22/481, इंदिरा नगर, लखनऊ–16) द्वारा विकसित
2. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता मापनी–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया।
3. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में केन्द्रीय विद्यालय एवं राज्य के शासकीय विद्यालय में पाठ्यक्रम के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया।
4. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया।
5. अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।
6. ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी जागरूकता एवं विद्यालयीन परिवेश में सार्थक सहसंबंध पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–23

गुप्ता, रजनी (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों तथा व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व तथा अध्ययन आदतों की तुलना करना।

न्यादर्श–नवोदय विद्यालय जिला रायगढ़ तथा बिलासपुर के कुल 200 विद्यार्थियों (50–50 छात्र–छात्राएँ) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. अध्यापन आदत मापनी–डॉ.एम.एन.पालसन (पुणे) एवं अनुराधा वर्मा
2. किशोर व्यक्तित्व मापनी–डॉ.श्रीमती ए.पाण्डेय

निष्कर्ष–

1. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर पाया गया। नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की अध्ययन आदतें, छात्रों की अपेक्षा उत्तम पायी गयीं।
2. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के 50 प्रतिशत उप परीक्षणों में सार्थक अंतर पाया गया एवं 50 प्रतिशत उप परीक्षणों (हीन भावना एवं आत्मविश्वास) में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तित्व में उच्च भावना, छात्राओं के व्यक्तित्व की उच्च भावना की अपेक्षा अधिक है।
4. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तित्व में साहस छात्राओं के व्यक्तित्व में साहस की अपेक्षा अधिक पाया गया।
5. नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत् उच्च अध्ययन आदत एवं निम्न अध्ययन आदत वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–24

दिघ्रस्कर, श्रुति (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''मल्टीमीडिया उपागम के प्रयोग का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह की भाषा योग्यता के संदर्भ में शैक्षिक अभिरूचि को ज्ञात करना।
2. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह की भाषा योग्यता के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करना।
3. प्रायोगिक समूह के छात्र–छात्राओं की भाषा योग्यता के संदर्भ में शैक्षिक अभिरूचि व उपलब्धि में सह संबंध ज्ञात करना।
4. नियंत्रित समूह के छात्र–छात्राओं की भाषा योग्यता के संदर्भ में शैक्षिक अभिरूचि व उपलब्धि में सह संबंध ज्ञात करना।

न्यादर्श–

बिलासपुर जिले के दो विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– प्रयोगात्मक विधि

शोध उपकरण–

1. उपलब्धि परीक्षण–स्वनिर्मित
2. अभिरूचि परीक्षण

निष्कर्ष–

1. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता से संबंधित अभिरुचि तथा शैक्षिक उपलब्धि के पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया।
2. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता के संदर्भ में अभिरुचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण के परिणामों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. प्रायोगिक समूह के छात्र तथा छात्राओं की भाषा योग्यता के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की भाषा योग्यता के संदर्भ में अभिरुचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

शोध क्रमांक–25

सोम, विजय कुमार (2010) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर ''कम्प्यूटर एडेड इन्सट्रक्शन आधारित गणित शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह की गणितीय शैक्षिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की गणितीय शैक्षिक अभिवृत्ति एवं गणितीय शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का परीक्षण करना।

न्यादर्श–

बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लॉक की शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थी।

शोध विधि– प्रयोगात्मक विधि

शोध उपकरण–

1. प्रमाणिक गणितीय शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी–Matlyn N.Suydam, ERIC Document Reproduction Servive (USA) Bethesda, Maryland (USA) 20014
2. अवलोकन पत्रक (साधनों की उपलब्धता संबंधी)–स्वनिर्मित
3. गणितीय शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण–जिसे दो चरीय रैखीय समीकरण, त्रिभुजों तथा चतुर्भुजों का क्षेत्रफल, कम्प्यूटर अवधारणाओं पर बनाया गया।

निष्कर्ष–

1. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की गणितीय शैक्षिक अभिवृत्ति का स्तर नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया।
2. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया।
3. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की गणितीय शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
4. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की गणितीय शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि में न्यूनतम धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–26

शर्मा, शिखा (2010) भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों में योग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. किशोर विद्यार्थियों में योग के प्रति अभिवृत्ति का मापन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर विद्यार्थियों की योग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श– शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों से 120 किशोर (60 शहरी तथा 60 ग्रामीण) विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. योग अभिवृत्ति मापनी–डॉ.महेश कुमार मुचल द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की योगाभ्यास के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी छात्रों में योगाभ्यास के प्रति अभिवृत्ति अधिक पायी गयी।
2. शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर बालक एवं बालिकाओं तथा ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् किशोर बालक–बालिकाओं की योग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् बालकों तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत् बालिकाओं की योग के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी क्षेत्र के बालकों में ग्रामीण क्षेत्र के बालकों तथा शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा योग के प्रति अभिवृत्ति अधिक पायी गयी।

––00––

शोध क्रमांक–27

दुबे, सुमित्रा (2010) भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई ''उच्च शिक्षित एवं निम्न शिक्षित पालकों के बच्चों में अंधविश्वासी प्रवृत्ति पर अध्ययन''

उद्देश्य–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अंधविश्वासी प्रवृत्ति का मापन करना।
2. उच्च शिक्षित एवं निम्न शिक्षित पालकों के बच्चों में अंधविश्वासी प्रवृत्ति का अंतर ज्ञात करना।

न्यादर्श– दुर्ग विकासखण्ड के दुर्ग–भिलाई नगर की शहरी एवं ग्रामीण शालाओं की कक्षा 9वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों (60 उच्च शिक्षित तथा 60 निम्न शिक्षित अभिभावकों के कुल 120 बच्चों) का चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. पालक अंधविश्वास प्रवृत्ति मापनी–डॉ.श्रीमती शैलजा भार्गव द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. उच्च एवं निम्न शिक्षित पालकों के बच्चों की अंधविश्वास प्रवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले पालकों के बच्चों की अंधविश्वास प्रवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च शिक्षित एवं निम्न शिक्षित पालकों के बच्चों की अंधविश्वासी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. शहरी क्षेत्रों के उच्च शिक्षित पालकों के बालक और बालिकाओं की अंधविश्वासी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले निम्न शिक्षित पालकों के बालक एवं बालिकाओं की अंधविश्वासी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–28

व्यवहारे, स्वप्ना (2010) भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई ''विद्यालयों में आपदा प्रबंधन संबंधित सेवाओं पर एक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में आपदा प्रबंधन सेवाओं के विभिन्न पहलुओं का मापन करना।

न्यादर्श– शहरी क्षेत्र की 13 एवं ग्रामीण क्षेत्र की 12 शालाओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– आपदा प्रबंधन मापन प्रश्नावली–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में आपदा प्रबंधन सेवाओं के स्तर में सार्थक अंतर पाया गया।
2. दुर्ग जिले के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में आपदा प्रबंधन सेवाओं में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी क्षेत्रों की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों से अच्छी पायी गयी।

––00––

शोध क्रमांक–29

प्रताप सिंह, ब्रीजेश (2010) कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, ''घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालकों/बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की सांवेगिक स्थिरता के आयाम पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की व्यक्तित्व एकीकरण के आयाम पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की सामाजिक समायोजन के आयाम पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श– 4 बी.एस.पी. व 4 निजी विद्यालयों के 40 छात्र तथा 40 छात्राओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– श्री मंगल एवं श्रीमती मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि इनवेटरी

निष्कर्ष–

1. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालकों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
5. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।

शोध क्रमांक–30

गायकवाड़, संजय (2010), कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर ''बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन लिंग एवं अध्ययन विषयों के संदर्भ में''

उद्देश्य–

1. बी.एड. प्रशिक्षणरत् पुरुष एवं महिला वर्ग के प्रशिक्षार्थियों की 'सामाजिक बुद्धि' में अंतर का मापन करना।
2. बी.एड. में प्रशिक्षणरत् विज्ञान एवं कला संकाय के प्रशिक्षार्थियों की 'सामाजिक बुद्धि' में अंतर का मापन करना।

न्यादर्श– बी.एड. में प्रशिक्षणरत् 80 (40 महिला तथा 40 पुरुष) प्रशिक्षार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–सामाजिक बुद्धि मापनी–श्री एन.के.चड्डा और ऊषा गणेशन द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. बी.एड. में प्रशिक्षणरत् पुरुष एवं महिला वर्ग के प्रशिक्षार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. बी.एड. में प्रशिक्षणरत् विज्ञान एवं कला संकाय के प्रशिक्षार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. बी.एड. में प्रशिक्षणरत विज्ञान संकाय के पुरुष एवं महिला वर्ग, कला संकाय के पुरुष एवं महिला वर्ग, विज्ञान एवं कला संकाय के पुरुष एवं महिला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. बी.एड. में प्रशिक्षणरत् विज्ञान एवं कला संकाय की महिला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–31

चौधरी, सुषमा (2010) श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, भिलाई ''नियमित व अनियमित शिक्षकों के शिक्षकीय तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना''

उद्देश्य–

1. नियमित तथा अनियमित शिक्षकों के शिक्षकीय तनाव का अध्ययन करना।
2. नियमित व अनियमित शिक्षकों के शिक्षकीय तनाव की तुलना करना।

न्यादर्श– 120 शिक्षक (नियमित शिक्षक–80, अनियमित शिक्षक–80) का सौद्देश्य चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

इंदौर टीचर्स जॉब स्ट्रेसर स्केल(ITJSS)–डॉ.मीना बुद्धिसागर

–डॉ.मधुलिका शर्मा

निष्कर्ष–

वर्तमान समय में जहां एक ओर नियमित शिक्षक स्कूलों में छात्रों की घटती संख्या तथा प्रशासनिक कार्यों की अधिकता से परेशान हैं वहीं अनियमित शिक्षक नौकरी में असुरक्षा की भावना से तनावग्रस्त हैं। अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते हैं कि दोनों किसी न किसी प्रकार से चिंतित तथा तनावग्रस्त हैं।

––00––

शोध क्रमांक–32

सिंह, पूनम (2010) श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, भिलाई ''उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की रुचि का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की रुचियों की जानकारी प्राप्त करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की रुचि की तुलना करना।

न्यादर्श– उच्चतर माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थी

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– बहुक्षेत्रीय रुचि मापनी–डॉ.श्रीमती एस.के.बावा द्वारा निर्मित

निष्कर्ष–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय के विद्यार्थियों की रुचि में सार्थक अंतर पाया गया।
2. रुचि पर लिंग का प्रभाव स्पष्ट नहीं है क्योंकि हिन्दू/मुस्लिम छात्र एवं छात्राओं की रुचि में अंतर नहीं पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–33

अग्रहरि, अनिल कुमार (2010) डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर ''छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा दसवीं की गणित विषय की पुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. पाठ्यपुस्तक में विभिन्न शिक्षण सिद्धांतों, प्रश्नों के लिए विभिन्न शिक्षण सूत्रों, प्रश्नों में लिंगभेद, प्रश्नों में साम्प्रदायिक अलगाव के कथन, क्षेत्रवाद को प्रोत्साहित करने वाले कथन, रेखाचित्र, चार्ट, ग्राफ इत्यादि नामांकित व यथास्थान एवं उचित मात्रा में प्रयोग किये हैं या नहीं का अध्ययन करना।
2. पाठ्यपुस्तक की छपाई, प्रयुक्त कागज एवं उसका बाह्य आवरण उपयुक्त एवं आकर्षक तथा पाठ्यपुस्तक के मूल्य का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श– सप्रयोजन न्यादर्श प्रविधि द्वारा बिलासपुर शहर के हाईस्कूल तथा हायर सेकेण्डरी शालाओं की कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों को गणित पढ़ाने वाले 30 शिक्षक–शिक्षिकाएँ।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– प्रश्नावली (शिक्षकों हेतु)–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. पाठ्यपुस्तक की पाठ्य वस्तु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुकूल है के संबंध में 90 प्रतिशत, इकाई का विभाजन उचित है जो छात्रों के अध्ययन में सहायक है के संबंध में 80 प्रतिशत, पाठ्यवस्तु से गणित शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति संभव है के संबंध में 70 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमति दी।
2. **पाठ्यवस्तु के चयन संबंधी निष्कर्ष–**विषय वस्तु गणित की नवीन धारणाओं के अनुरुप है के संबंध में 80 प्रतिशत, छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल है के संबंध में 50 प्रतिशत, पठन–पाठन एक सत्र के लिए निर्धारित अवधि में संभव है के संबंध में 70 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमति दी।

3. **प्रस्तुतीकरण संबंधी निष्कर्ष–**पाठ्यपुस्तक की भाषा सरल एवं स्पष्ट है के संबंध में 100 प्रतिशत, पाठ्यवस्तु तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत की गई है के संबंध में 70 प्रतिशत, गणित के सूत्रों, नियमों व सिद्धांतों को समझाने में पर्याप्त उदाहरणों का प्रयोग किया गया है के संबंध में 50 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमति दी है।

4. **पाठ्यपुस्तक के बाह्य स्वरूप संबंधी निष्कर्ष–**पाठ्यपुस्तक में गुणवत्तापूर्ण कागजों का उपयोग एवं उसकी बांइडिंग व्यवस्थित है के संबंध में 50 प्रतिशत तथा मूल्य उचित है के संबधं में 70 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमति व्यक्त की है।

––00––

शोध क्रमांक–34

यूसेबियस, मधुरिका (2010) डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर ''बिलासपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च प्राथमिक स्तर की शासकीय शालाओं में बालिका शिक्षा की प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की उच्च प्राथमिक स्तर की शासकीय शालाओं में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षिक प्रगति का अध्ययन करना।
2. अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

न्यादर्श– बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड की उच्च प्राथमिक स्तर की शासकीय शालाओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. प्रधान अध्यापक हेतु साक्षात्कार प्रश्नावली–स्वनिर्मित
2. शिक्षक हेतु साक्षात्कार प्रश्नावली–स्वनिर्मित
3. छात्राओं हेतु साक्षात्कार प्रश्नावली–स्वनिर्मित
4. अभिभावकों हेतु साक्षात्कार प्रश्नावली–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. शहरी क्षेत्र की बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त करने में ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं से आगे हैं।
2. अभिभावकों का दृष्टिकोण बालिका शिक्षा के प्रति नकारात्मक है।

––00––

शोध क्रमांक–35

जायसवाल, धनलाल (2010) डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर ''बिलासपुर शहर के शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 8वीं के न्यून उपलब्धि स्तर वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. कक्षा आठवीं के न्यून उपलब्धि स्तर वाले बच्चों की पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा अन्य समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।
2. समस्याओं के समाधान के उपाय खोजना।

न्यादर्श– बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखण्ड के अंतर्गत बिलासपुर शहर के उच्च प्राथमिक स्तर के 29 शासकीय विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन 'लॉटरी विधि' से किया गया।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. **अवलोकन–**न्यून उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं से संबंधित जानकारी के लिए अध्ययनकर्ता द्वारा अनियंत्रित, नियंत्रित एवं असहभागी अवलोकन।
2. **साक्षात्कार–**विषय से संबंधित व्यक्तियों से

निष्कर्ष–

1. 35 प्रतिशत छात्रों की उपलब्धि न्यून पायी गयी।
2. न्यून उपलब्धि वाले अधिकांश विद्यार्थियों के माता–पिता का व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी है। परिणामस्वरूप वे अपनी संतानों को अध्यापन कार्य में किसी प्रकार का सहयोग नहीं कर पाते हैं।
3. संयुक्त परिवार में रहना भी विद्यार्थियों की न्यून उपलब्धि का प्रमुख कारण है।
4. अधिकांश न्यून उपलब्धि वाले विद्यार्थियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के मध्य अंतःक्रिया संबंध सामान्य है। विद्यार्थियों के साथ उनके परिवार में सदस्यों के

द्वारा किसी भी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जाता है तथा उन पर परिवार का सामान्य नियंत्रण है।

5. न्यून उपलब्धि वाले समस्त विद्यार्थियों के पास सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं जिन विषयों में कठिनाई का अनुभव होता है उस विषय के प्रति उनमें रूचि नहीं है।

6. न्यून उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की कक्षा में उपस्थिति संतोषजनक है तथा अपने विद्यालय के शिक्षकों से संबंध सामान्य हैं।

7. न्यून उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की विषयों में रुचि नहीं है तथा गृहकार्य पूरा न कर पाने के कारण वे कक्षा में अनुपस्थित रहते हैं।

——00——

शोध क्रमांक–36

सोलंकी, दीप्ति (2010) पं.हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ''बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन रायपुर नगर के संदर्भ में''

उद्देश्य–

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

न्यादर्श– रायपुर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र से 50–50 बालिकाओं के अभिभावकों का तथा झुग्गी–झोपड़ी से 50 बालिकाओं के अभिभावकों का चयन किया गया इस प्रकार तीनों क्षेत्रों से 150 अभिभावकों का चयन किया गया।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– अभिवृत्ति मापनी–स्वनिर्मित

निष्कर्ष–

1. शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों की बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति कम है।
2. शहरी क्षेत्र की अपेक्षा झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्र के अभिभावकों की बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति बहुत निम्न है।
3. ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्र के अभिभावकों की बालिका शिक्षा की आवश्यकता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति निम्न है।

––00––

शोध क्रमांक–37

खाखा, जगरानी (2010) पं.हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालय परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन''

उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के विद्यालय परिवेश का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालय परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

न्यादर्श– 3 शासकीय तथा 3 अशासकीय विद्यालयों से 120 विद्यार्थियों का चयन। प्रत्येक शाला से 10 बालक तथा 10 बालिकाओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– 1. विद्यालय परिवेश सूची–डा.करुणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित।
2. विद्यार्थियों के कक्षा आठवीं के प्राप्तांकों का प्रतिशत

निष्कर्ष–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा विद्यालय परिवेश में उच्च धनात्मक संबंध पाया गया।
2. शासकीय/अशासकीय विद्यालय के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा विद्यालय परिवेश के मध्य उच्च धनात्मक संबंध पाया गया।

शोध क्रमांक–38

प्रसाद, मनोरंजन (2010) पं.हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ''शारीरिक रूप से विकलांग व गैर विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य–

1. शारीरिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन।
2. शारीरिक रूप से गैर–विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन।
3. शारीरिक रूप से विकलांग एवं गैर विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं की तुलना करना।

न्यादर्श– रायपुर जिले के माध्यमिक स्तर के 12 से 15 वर्ष आयु वर्ग के शारीरिक रूप से विकलांग एवं गैर विकलांग (50–50) विद्यार्थियों का चयन।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण– प्रश्नावली निर्मित–डॉ.बीना शाहा और डॉ.एस.के.लखेरा

निष्कर्ष–

1. शारीरिक रूप से विकलांग बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया।
2. शारीरिक रूप से गैर विकलांग बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया।
3. शारीरिक रूप से विकलांग एवं गैर विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया।

––00––

शोध क्रमांक–39

वर्मा, रितु (2010) पं.हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ''रायपुर शहर के आसपास की श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों की बालकों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति''

उद्देश्य–

1. श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों के बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. प्राथमिक शालाओं में बच्चों को प्रवेश लेने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करना।
3. किन कारणों से बच्चे प्राथमिक शिक्षा बीच में छोड़ देते हैं उन कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
4. प्राथमिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण के लिए चलाई गयी विभिन्न योजनाओं का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक शिक्षा दर को बढ़ाने के लिए कारगर उपाय सुझाना, जिससे प्राथमिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण के लिए चलाई जा रही योजनाएँ सफल हों।

न्यादर्श– रायपुर शहर के आसपास की श्रमिक बस्तियाँ–कृष्णा नगर, पुरानी बस्ती, शंकरनगर, न्यू शांति नगर, कटोरा तालाब, टिकरापारा, चंगोराभाठा, संतोषीनगर के 100 बच्चे।

शोध विधि– सर्वेक्षण विधि

शोध उपकरण–

1. प्रश्नावली–श्रमिकों हेतु
2. प्रत्यक्ष अवलोकन
3. साक्षात्कार–श्रमिकों से

निष्कर्ष–

1. श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति नहीं पायी गयी।
2. श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

3. श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों की पारिवारिक और सामाजिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

4. श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों के अनुसार कुछ परिस्थितियों में बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर पाठ्यक्रम का प्रभाव पड़ता है।

5. श्रमिक बस्तियों में रहने वाले लोगों के कार्य/व्यवसाय का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

6. 50 प्रतिशत के अनुसार शाला लगने का समय बच्चों की शाला में नामांकन एवं उपस्थिति को प्रभावित करता है तथा 50 प्रतिशत के अनुसार प्रभावित नहीं करता।

——00——

Research No.-40

Verulkar, Archana (2010) Govt College of Education, Raipur "A study of achievement level and interest in learning of children studying by Traditional methodology and Multi Grade Multi Level."

Objectives of the study:

1. To study the interest of learning and achievement level of children studying by Traditional methodology and MGML.
2. To find out the relation of achievement level and interest of learning on children studying by traditional methodology and MGML.
3. To know the opinion of teachers regarding MGML and traditional methodology.

Sample: 160 students of 8 Govt.Primary Schools of Raipur District.

Research Methodology: Survey method

Research Tools:

1. Achievement test for class II children-Self made
2. Questionnaire of learning interest for Class II children-Self made
3. Questionnaire for teachers opinion-self made

Major Findings:

1. The achievement level of students studying by MGML was found to be better than that of those studying by traditional methodology.
2. There was no significant difference in the interest of learning of students studying by traditional methodology and by MGML
3. There was a high positive correlation between the achievement level and interest of learning of children studying by traditional methodology.
4. There was a high positive correlation between the achievement level and interest of learning of children studying by MGML.
5. The teacher agreed that MGML apporach was more interesting and effective than traditional methodology.

——00——

Research No.-41

Nandy, Indrani (2010) Govt College of Education, Raipur "Developing oral communication skills through language games in English at Primary level."

Objectives of the study:

1. To develop listening skills in English through language games at Primary Schools.
2. To develop speaking skills in English through language games at Primary Schools.

Sample: 100 students of class-4 of two schools (1 Govt. and 1 Non Govt.) of Jagdalpur block of Bastar District were selected by Random Sampling.

Research Methodology: Experimental Method

Research Tools:

1. Achievement test for listening & speaking skill-Self Made
2. Pre test and Post test for students- Self Made
3. Teaching materials & audio tape

Major Findings:

1. There is no significant difference found between listening skills of learners of Govt. and Non Govt.Schools in post test. The exposure that was given to the students was helpful for them to listen and understand better.
2. There is no significant difference found between speaking skills of students of Govt. and Non Govt. schools.
3. Language games were helpful to increase oral communication skills of students.

——00——

Research No.-42

Sandhya, Sahu (2010) Govt College of Education, Raipur "A study of Multiple Intelligence among the students of Higher Primary Level."

Objectives of the study:

1. To access the Linguistic, Logical, Musical, Kinesthetic and Visual/spatial intelligence among the students of Higher Primary Level.
2. To compare the level of all five types of intelligence among the students of Higher Primary Level.
3. To categorize the students of Higher Primary level on the basis of assessment of visual, kinesthetic intelligence.
4. To measure the achievement in Science among the students of Higher Primary level in all the categories.
5. To study the relation between the achievement and the types of intelligence among the Higher Primary level.
6. To give the suggestions and provide better teaching methodology to teachers and teacher educators.

Sample: 120 students of class 7^{th} were selected from Abhyas Shala, Shankar Nagar, Raipur by Random Sampling method.

Research Methodology: Experimental Methodology

Research Tools:

1. Questionnaire for the multiple intelligence test-Self Made
2. Questionnaire for pre and post tests of achievement-Self Made

Major Findings:

1. All the students possess more than one type of intelligence.
2. The degree of types of multiple intelligence is different in each student.
3. Students achievement is directly related to their intelligence.
4. The effect of teaching methodology with respect to the students' intelligence is undesirably positive.
5. There is a significant difference in achievement of experimental group and controlled group of students.

Research No.-43

Toppo, Prity (2010) Govt College of Education, Bilaspur "To study the effect of innovative methods on joyful learning"

Objectives of the study:

1. To make teaching joyful using innovative methods.
2. To compare the innovative and traditional method of teaching.
3. To compare academic achievement of the experimental & controlled group students.
4. To observe the change in students' behaviour & attitude towards Science subject.

Sample: 80 students (40 girls and 40 boys) from upper primary schools of Surguja district.

Research Methodology: Experimental Method.

Research Tools:

Quiz, Science fair, Science corner, Teaching with CD

Attitude test-by Dr.Smt.S.S.Malviya.

Major Findings:

1. The academic achievement test showed no difference in the pre test of experimental and controlled group.
2. Experimental group showed good performance in the academic achievement in post test compared to the controlled group.
3. High attitude towards Science was found in the experimental group of students.
4. Experimental group students were found to be more enthusiastic towards participation in the Science Quiz and Science Fair.

——00——

Research No.-44

Bardiya, Shraddha (2010) Bhilai Maitri College Risali, Bhilai "A study on low achievers in relation to their educational Maladjustment of Grade VIII Students."

Objectives of the study:

1. To measure the educationl maladjustment of low achievers of class VIII students studying in private schools and govt. schools.
2. To measure the educational maladjustment of low achievers of class VIII students studying in Hindi medium and English medium schools.

Sample: 120 students belonging to grade VIII were taken from 3 Govt. and 3 Private School.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Educational Adjustment inventory-By Seema Rani and Dr.Basant Bhadur Singh, Dept. of Education, R.B.S.College Agra.

Major Findings:

1. There is no significant difference found between the educational maladjustment of low achiever boys & girls students studying in class-VIII.
2. There is no significant difference found between the educational maladjustment of low achievers of private and Govt.school students studying in class VIII.
3. There is a significant difference found between the educational maladjustment of low achievers of private Hindi and English medium school students studying in class VIII.
4. There is no significant difference found between the educational maladjustment of low achievers of private Hindi medium boys and girls, English medium boys and girls and Govt.Hindi medium boys and girls studing in class VIII.

Research No.-45

Gardia, Bhawna (2010) Kalyan P.G.College, Bhilai "Stress level in school teachers."

Objectives of the study:

1. To measure the stress level of primary, middle and higher secondary school teachers.
2. To compare the stress level of teachers on the basis of gender.

Sample: The sample included 120 teachers (40 Primary, 40 Middle and 40 Higher Secondary School Teachers). They were selected randomly from different school (Private, B.S.P. and Government Schools of Bhilai Nagar).

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Singh Personal Stress Source Inventory (SPSSI) made by Shri. Arun Kumar Singh, Patna, 2004

Major Findings:

1. There exists a significant difference in the stress level between primary, middle and higher secondary school teachers. Primary female teachers were found to have the highest stress level and male teachers of middle schools were found to have least stress. The reason for primary female teachers highest stress level could be that the curriculum setting for primary students have more of activities, assignments for the teachers and the age group of students the primary school teachers deal with more individual attention which results in long working hours.
2. There exists a significant difference in the stress level between female and male school teachers.Stress was found in female teachers more because they have a lot of family responsibilities as well as they are expected to have a decent status in the society as teachers, which in turn increases performance anxiety and identity completion.

Research No.-46

Deepti Rajeev (2010) Kalyan P.G.College, Bhilai "Impact of Anxiety on study habits of class-IX Students."

Objectives of the study:

To study the effect of gender and anxiety on study habits and all eight dimensions of study habits i.e. Budgeting time, physical condition, reading ability, note taking ability, learning motivation, taking examination memory and health.

Sample: 120 students from four schools were selected by random sampling method.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools:

1. "Academic Anxiety Scale" developed by Shri.Singh & Sengupta
2. "Study habit inventory" developed by Shri.Palsane & Sharma

Major Findings:

There exists no significant effect of gender and anxiety on the study habits of class IX stduents. This is because in this competitive world parents, teacher, school administrators are more alert now a days. Continuous positive assurance and encouragement overcome student worries, anxiety and fear.

——00——

Research No.-47

Sharma, Anita (2010) Kalyan P.G.College, Bhilai "A study of attitudes of parents towards mentally retarded children."

Objectives of the study:

To study the attitude of parents of mentally retarded children on various dimensions like social awareness, social competence, parental rejection, parental acceptance, adjustment, emotional competence.

Sample: The sample consisted of 30 parents (either father or mother) of mentally retarded children. Subjects were selected from institutionalized children.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Attitude scale-Self made

Major Findings:

Having an intellectually subnormal child is not all together a sign of so called bad fate or mistortune to everyone, but it can also be a challenge which strengthens the parents of those children. At the same time it is equally true that having a mentally retarded child is a source of chronic stress to the family members.

——00——

Research No.-48

Chatterjee, Nandita (2010) D.P.Vipra College of Education, Bilaspur "Attitudes of principals, teachers, students and parents towards grading system in CBSE Schools."

Objectives of the study:

1. To make people aware of grading system.
2. To know importance of grading system via scoring.
3. To know how teachers, principals, students and parents personally look towards the newly adopted grading system.
4. To identify the changes on the basis of reserach to make the system more acceptable.

Sample: 13 principals, 58 teachers, 83 students from 13 schools and 28 parents were selected.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Questionnairs for measuring the attitudes of principals, teachers, students and parents-Self made

Major Findings:

1. The study reveals that 46.15% of principals are neutral for grading system 30.76% are positive where as 15.38 are highly positive. Only 7.69 percentages of principals are negative towards grading systems.
2. 53.44% of teachers are neutral towards this system, 34.48% of teachers are positive whereas 12.06% of teachers are negative towards this system.
3. 42.16% of students are negative 33.73% are neutral, 21.68% are positive and only 2.40% are highly negative towards grading system.
4. Majority of parents i.e. 64.28% are neutral towards the grading system 14.28% are positive, 17.85% are negative and 3.57% are highly positive.

——00——

Research No.-49

Adhikari, Kamalesh (2010) D.P.Vipra College of Education, Bilaspur "A study on effective implementation of Mid-Day Meal Programme in Lower and Upper Primary School in Bilaspur City."

Objectives of the study:

1. To improve the health condition of the students.
2. To Retain and Maintain regularity of the students in schools.
3. To detect the difficulties in the effective implementation of the programme.
4. To suggest measures to improve the successful implementation of the programme.

Sample: 200 students, out of which 100 students are of primary section (50 boys and 50 girls) and 100 students (50 boys and 50 girls) are selected from upper primary section.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Questionnaire -Self made, Interview, Observation

Major Findings:

1. Mid-Day Meal programme increased the over all enrolment, retention, attendance and achievement.
2. Mid-Day Meal programme improved the health condition and nutritional standard of the students.
3. Mid-Day Meal programme fulfills the objectives of universal elementary education.
4. Mid-Day Meal programme is very popular but several problems are being faced in its implementation.
5. Mid-Day Meal programme shows advantages in the area of Nutritional standard, General health, Food habits, Social adjustment, Regularity, School attendance, Retention etc.

Research No.-50

Pandey, Awinash (2010) Pt.Harishankar Shukla Memorial College, Raipur "A comparative study of the curriculum of Commerce subject at Higher Secondary level, developed by Chhattisgarh Board of Secondary Education and Central Board of Secondary Education."

Objectives of the study:

1. To study the Commerce subject curriculum of Chhattisgarh Board of Secondary Education and Central Board of Secondary Education.
2. To compare the Commerce curriculum developed by Chhattisgarh Board of secondary Education and Central Board of Secondary Education as perceived by the teachers and students both.

Sample: 60 students (30 C.G.Board, 30 CBSC Board) and 30 teachers (15 C.G.Board Schools, 15 CBSC Board Schools) were taken by purposive sampling method.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Questionnaire-Self made

Major Findings:

1. The study of Commerce subject curriculum of Chhattisgarh Board of Secondary Education reveals that its revision is required because some important topics are to be included in it.
2. The study of Commerce subject curriculum of Central Board of Secondary Education reveals that it includes all required topics of Commerce which are essential for the students looking to the present scenario.
3. There is significant difference in Commerce curriculum of Chhattisgarh Board of Secondary Education and Central Board of Secondary Education as perceived by the teachers.

4. There is significant difference in Commerce curriculum of Chhattisgarh Board of Secondary Education and Central Board of Secondary Education as perceived by the students.

5. There is significant difference in Commerce curriculum of Chhattisgarh Board of Secondary Education and Central Board of Secondary Education as perceived by the teachers and students.

——00——

Research No.-51

Das, Bani (2010) Pt.Harishankar Shukla Memorial College, Raipur "A Comparative study of Adjustment Problems of SC,ST and General Students of High School of Raipur City."

Objectives of the study:

1. To study the adjustment problems of SC, ST and General students of high school classes.
2. To compare the adjustment problems of male & female SC,ST & General students of High School Classes.

Sample: 120 students are taken from 3 Government and 3 Nagar Nigam Schools as the sample of the study.

Research Methodology: Normative survey Method

Research Tools: Bell's Adjustment Inventory developed by Dr.R.K.Ojha

Only four areas of adjustment i.e.home, health, social and emotional adjustment are taken for study.

Major Findings:

1. There is no significant difference in adjustment problem between Male high school students of SC/ST and General categories.
2. There is no significant difference in adjustment problem between Male & Female high school students SC/ST and General categories, within the same category.
3. There is significant difference in adjustment problem between Female high school students of SC/ST and General categories.
4. There is significant difference in adjustment problem between High school students of SC/ST and General students irrespective to sex.

——00——

Research No.-52

Kumari, Binita(2010) Pt.Harishankar Shukla Memorial College, Raipur "A comparative study of school climate and academic achievement of students of high and low effective primary schools."

Objectives of the study:

1. To study the school related variables in high and low effective primary schools.
2. To find out whether there exists significant difference between the school related variables in high and low effective primary schools.
3. To find out the academic achievement of students in high and low effective primary schools.
4. To find out whether there exists significant difference between the students' academic achievement in high and low effective primary schools.

Sample: 113 Students of 8th class from two high and two low effective primary school were selected of Government Sector.

Research Methodology: Normative Survey Method

Research Tools: School Environment Inventory by Dr.Karuna Shankar and Academic Achievement Motivation Test by Dr.T.R.Sharma.

Major Findings:

1. There exists significant difference between high and low effective primary schools in the creative stimulation of school climate.
2. There exists significant difference between high and low effective primary schools in the cognitive encouragement of school climate.
3. There exists significant difference between high and low effective primary schools in the control of school climate.
4. There exists significant difference between high and low effective primary schools in the academic achievement and motivation of students.

5. There is no significant difference between high and low effective primary schools in the acceptance of school climate.
6. There is no significant difference between high and low effective primary schools in the permissiveness of school climate.
7. There is no significant difference between high and low effective primary schools in the rejection of school climate.

——00——

Research No.-53

Sidhu, Jashmesh (2010) Pt.Harishankar Shukla Memorial College, Raipur "A study of Emotional Intelligence of Higher Secondary students in relation to academic anxiety and the streams."

Objectives of the study:

1. To study the academic anxiety of Higher Secondary Students.
2. To study emotional intelligence of Higher Secondary Students.
3. To study the academic anxiety in relation to emotional intelligence of Higher Secondary students.
4. To study academic anxiety according to different stream of higher secondary students.

Sample: 100 students of the class XI of Raipur city were selected by Random Sampling.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools:

1. Emotional Intelligence scale by Dr.S.Mangal and Mrs.Shubra Mangal (1971).
2. Academic Anxiety scale for children by Dr.A.K.Singh and Dr.A.Sen Gupta (1986).

Major Findings:

1. There is no significant relalionship between both emotional intelligence and academic anxiety of students.
2. There is a significant difference between emotional intelligence of Arts & Commerce stream of higher secondary students. Emotional intelligence is higher among commerce students.
3. There is no significant difference between academic anxiety of Arts and Commerce stream of higher secondary students.

——00——

Research No.-54

Kirtania, Kanan (2010) Pt.Harishankar Shukla Memorial College, Raipur "A study on the causes of the slow learing at primary level and guidelines for the teachers."

Objectives of the study:

1. To study the causes of the slow learning in children at primary level.
2. To study and explore the method of effective teaching for slow learners.
3. To study how teachers should help the slow learners to adjust better in life and school.
4. To prepare the guidelines for the teachers.

Sample: Study was confirmed to the 5th class of 5 schools of Raipur. A sample size of 50 students & 30-30 of teachers and 30 of parents was taken.

Research Methodology: Survey Method

Research Tools: Questionnaires- For teachers, students and parents- Self made

Major Findings:

1. The class size should be small i.e.20:1. The school should have lesser strength.
2. Parents should give quality time to their wards & should know their educational behavior & interests.
3. Primary level slow learner have problems in studying & communicating especially in second language. Special teaching aids & methods should be use for this.
4. Students should visit physiotherapists, doctors, counselors & leading educationists regularly with their parents/teachers to explore their difficutties & interests.
5. Teacher should be properly guided & trained for teaching slow learners.
6. Their should be special schools for slow learners.

——00——

Research No.-55

Kori, Preety (2010) Pt.Harishankar Shukla Memorial College, Raipur "A comparative study of the reasoning ability of English and Hindi Medium Primary School Students."

Objectives of the study:

1. To compare the reasoning ability of Govt. English and Hindi Medium Primery school Students.
2. To compare the reasoning ability of Private English and Hindi Medium school Students.

Sample: 120 students of class VII of Korba district were selected by Random Samping method.

Research Methodology: Normative Survey Method

Research Tools: The reasoning ability test-Prepared by Smt.Krishna Byati

Major Findings:

1. There exists significant difference between the reasoning ability of Govt. English and Hindi medium students.
2. There is significant difference between the reasoning ablitiy of private English and Hindi Medium Students.

——00——